भैरवप्रसाद रचित 'गंगामैया' उपन्यास में आँचलिकता

डॉ. वैशाली वाय. पटेल
एडहोक अध्यापिका (हिन्दी विभाग)
वी.एस. पटेल आर्टस् एंड सायन्स कोलेज,
बीलीमोरा, कोलेज रोड, आंतलीया, तहसील- गणदेवी, जि. नवसारी

आचंलिक उपन्यास एक ऐसा उपन्यास है जो किसी क्षेत्र, गाँव, प्रदेश या अंचल विशेष को लेकर वहाँ के लोगों के रहन-सहन, रीति-रिवाज, वेशभूषा, नृत्य, संगीत आदि को ध्यान में रखकर वहाँ की संपूर्ण परिस्थिति का वर्णन पाठ्य जगत के सामने प्रस्तुत किया जाता है। सामान्य रुप से देखा जाये तो 'अंचल' या 'आंचल' आंग्ल शब्द [रीजन] का रुपांतर है। जो किसी क्षेत्र या गाँव के सीमांत आदि के लिए प्रयुक्त होता है। क्षेत्र विशेष को ही ध्यान में रखकर रचना करने के कारण इस विधा को 'आंचलिकता' शब्द के रुप में ग्रहण किया जाने लगा। कालांतर में 'आंचलिकता' एक नूतन विधा के रुप में विकसित हुई जो स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में एक सर्वथा नवीन और लोकप्रिय विधा के रुप में प्रचलित हुई।

अंचल का सीधा और सरल अर्थ है- विशेष भूखंड, भू-भाग अथवा क्षेत्र। अंचल से संबंध रखने वाली प्रत्येक वस्तु 'आंचलिक' शब्द के अंतर्गत समावेश की जा सकती है। अँचल को देखने का अर्थ है संपूर्ण मानव जीवन को देखना या उसका वर्णन करना।

'आंचलिक' शब्द विशेषण का है ओर वह 'उपन्यास' शब्द के साथ जुडकर उसे एक विशिष्ट रुप से परिभाषित करता है। जैसे- 'आँचलिक' शब्द 'अंचल' में 'इक' प्रत्यय लगाने से बना है। जिसका अर्थ 'अंचल संबंधी' ऐसा हो जाता है। संस्कृत में इसके कई अर्थ दिए गए है। जैसे- साडी का छोर, पल्लु आदि। हिंदी में 'अंचल' का सीधा अर्थ और स्पष्ट अर्थ है- 'जनपद' या 'क्षेत्र' जो अपने में पूर्ण भौगोलिक विभाग होता है। उसके अँचल विशेष के अपने रीति-रिवाज, अपने सुख: दु:ख, अपनी जीवन प्रणाली, रहन-सहन, अपने पूर्वजो की परंपराएँ, मान्यताएँ आदि है जिससे वे गतिशील रहते है। आँचलिक उपन्यासकार अपनी रचना के लिए जिस गाँव, प्रदेश, सीमा क्षेत्र का चयन करता है उसमें वसाहत करने वाले लोगों के हृदय की भावनाओं को सुनकर उसे यथार्थ रुप में तथा उसके सुख-दु:ख को सही रुप में चित्रण करने का प्रयास करता है। आँचलिक उपन्यास के बारे में अनेक विद्वानों ने अलग-अलग परिभाषाएँ दी है। जिसमें शब्दों की भिन्नता देखाई देती है। मूल रुप में सभी परिभाषाओं का अभिप्राय एक जैसा है। डो. गणपतिचंद्र गुप्त ने ग्रामीण वातावरण और लोकसंस्कृति को महत्व देते हुए कहा है कि—" आँचलिक उपन्यासों में किसी अंचल या प्रदेश विशेष के ग्रामीण वातावरण एवं लोकसंस्कृति का चित्रण किया जाता है"[१]

श्री ब्रजविलास श्रीवास्तव ने भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को महत्व देते हुए कहा है कि- "किसी अंचल विशेष कि भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं का चित्रण करना ही आँचलिक उपन्यास का प्रमुख उदेश्य होता है।" [२]

आचार्य नंददुलारे बाजपेयी ने किसी अज्ञात जातियों के वैविध्यपूर्ण जीवन को महत्व देते हुए कहा कि- "आँचलिक उपन्यासों में अपरिचित और अज्ञात जातियों के जीवन का वैविध्यपूर्ण चित्रण रहता है"।[३] यथार्थवाद को महत्व देते हुए मक्खनलाल शर्मा ने कहा है कि- " सामाजिक यथार्थवादी चित्रण करने वाले उपन्यास ही आँचलिक उपन्यास है"। [४]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर आँचलिक उपन्यासों का स्वरुप देखते हे तो आँचलिकता की चर्चा हिंदी में पाँचवें दशक से अब तक चली आ रही है। हिंदी साहित्य में इस शब्द का प्रयोग सन १९५२-५३ में होने लगा और धीरे-धीरे इतना व्यापक और लोकप्रिय होने लगा कि साहित्य में वह एक आंदोलन बन गया।

आँचलिक उपन्यासों में अंचल को एक नायक के रुप में ही माना जाता है। अंचल में अच्छाई और बुराई को उसकी पूर्णतामें उभारा जाता है। दोनों में से एक के अभाव में व्यक्ति अधूरा है। जैसे एक सिक्के की दो बाजुओं के समान हो। जीवन की सारी परंपराओं, ऐतिहासिक प्रगतियों आदि सब बातों का सच्चाई से पकडना ही उपन्यास का ध्येय है। किसी क्षेत्र के सामान्य जीवन सत्य को ही ये उपन्यास उद्घाटित करते है। देशकाल, जाति, धर्म, भौगोलिक स्थिति, आर्थिक प्रणाली, सामाजिक संगठन, रीतिरिवाज, भाषा आदि से निर्मित क्षेत्रिय जीवन का आख्यान ही आँचलिक उपन्यास का विषय है। किसी अँचल के निवासियों को ही अनेक घनिष्ठतम रुप में जुडे जीवन के परिप्रेक्ष्य में ये उपन्यास वर्णित करते है। श्री वासुदेवशरण अग्रवाल ने कहा था कि आँचलिक उपन्यासों में ऐसे जनपदों के वर्णन चित्रण द्वारा राष्ट्र की आत्मा से प्रत्यक्षता का परिचय मिलता है। जैसे- " भूमि राष्ट्र का शरीर है, जन उसका प्राण है और संस्कृति मन है। इस तीनों के सम्मिलन से ही राष्ट्रत्मा का निर्माण होता है।" [५]

इस प्रकार आँचलिक उपन्यासों में अँचल के भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्र के सामान्य जीवन सत्यों का अंतर या भौगोलिक स्थिति, आर्थिक सामाजिक प्रणाली, रीति-रिवाज, मनोवैज्ञानिकता के बीच स्थापित कर जीवन की स्वीकृति आँचलिकता का वर्णन करती है। हिंदी साहित्य में आँचलिक उपन्यासों की भरमार है। उसमें मैंने भैरवप्रसाद गुप्तजी रचित 'गंगामैया' उपन्यास की चर्चा करने की कोशिश की है। मेरे प्रपत्र का विषय है ' गंगामैया उपन्यास में आँचलिकता'।

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में भैरवप्रसाद गुप्तजी का स्थान महत्वपूर्ण है। समाजवादी, मार्क्सवादी या जनवादी उपन्यासकारों में उनका स्थान सर्वोपरी है। आजादी के बाद मृतपाय सामंतवादी व्यवस्था और नयी पूंजीवादी व्यवस्था का भौतिकवादी दृष्टि से जितना सही और सक्षम चित्रण तथा संघर्ष में बदलनेवाली परिस्थितियों का विश्लेषण गुप्तजी ने किया है वैसा अन्य जनवादी लेखक नही कर सके। भैरवप्रसाद गुप्तजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। भैरवप्रसाद गुप्तजी का जन्म उत्तरप्रदेश के बालिया जिले के छोटे से गाँव में मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। माताजी की छत्रछाया में विकसित होने के कारण भैरवप्रसाद गुप्तजी पर अपनी माताजी के व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव पडा। भैरवप्रसाद गुप्तजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने साहित्य के सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। उपन्यास, कहानी, नाटक और रेडियों नाटकों में भी

गुप्तजीने सफलता पूर्वक सृजन किया है। कथानक की दृष्टि से इनके उपन्यास तीन प्रकार के है। पहला जो ग्रामीण परिवेश पर आधारित है। इनके कथानक के केंद्र में किसान और खेती की समस्याएँ हैं। ऐसे उपन्यासों में 'शोले', 'जंजीर और नया आदमी', 'आशा', 'कालिंदी' और 'रम्भा' आदि मुख्य है। दूसरे भाग में वे उपन्यास आते है, जिनमें मिल-मजदूरों और मिल-मालिकों के बीच हुए संघर्ष को आधार बनाकर कथा लिखि गई है। गुप्तजी मजदूरों में साहस पैदा करते है। ऐसे उपन्यासों में 'मशाल', 'नौजवान', 'अंतिम अध्याय', 'भाग्य देवता' आदि है। तीसर उपन्यास ऐसे है जिनका केंद्रीय विषय गाँव है। धनवान होते धनाढ्य जमींदार और परेशान किसानों की बात है। गुप्तजी ने बदलते हुए गाँव से कथानक चुनकर, सामाजिक और आर्थिक शोषकों को बेनकाब किया है।

भैरवप्रसाद गुप्तजी का प्रथम उपन्यास 'शोले' जो धारावाहिक रुप में भी प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास में सामंत तथा किसान वर्ग के दों प्रेमियों की असफल प्रेम-कथा का वर्णन है। इस प्रेम-कथा के नायक बरन और नायिका शोभी है। बरन के माँ-बाप उसे बचपन में छोडकर चल बसे थे। एक बूढे मुख्तियार ने उसे बी.ए. तक पढाया था। बरन शोभी से विवाह करना चाहता है। लेकिन शोभी के पिताजी शोभी का विवाह वहाँ करना चाहता है, जहाँ उसका पहला रिश्ता तय हुआ था। इस घटना से बरन पर पागलपन सवार होता है। बरन शोभी की बहन को शोभी के रुप में देखता है। लेकिन वह अनंतम नामक व्यक्ति से प्रेम करने लगती है। बरन को यह प्रेम पसंद नही था। इस घटना से बरन अपनी जान देने पर तुल जाता है। बरन की दस साल की तपस्या पानी में मिल जाती है। दूसरी तरफ शोभी ससुराल में सुखी नही थी। पति की मृत्यु के बाद बरन की प्रतिक्षा में पागल होकर भिखारन बनकर स्टेशन के सामने बैठी रहती है। बरन एक महुल्ले में घर लेकर बाबा बरनदास बन जाता है। वही ठाकुर की एक मूर्ति बनाकर लोगों में खाना-पिना बाँटने लगता है। शोभी अपने चौखट पर अपना प्राण दे देती है। फिर से बरन एक बार अकेला हो जाता है। इस प्रकार दोनों प्रेमी प्रेम की आग में जलकर राख हो जाते है।

इस प्रकार इस उपन्यास में सामंती सभ्यता के अवशेष छोटे-छोटे गाँव में जमींदार का माहौल, गरीब किसान के घर की बेसहारा लडकी के असफल प्रेम-गाथा के लिए लेखक ने उसके अनुसार का वातावरण निर्मित किया है।

गुप्तजी रचित 'मशाल' उपन्यास में मजदूरों के संघर्ष की कथा है। इस उपन्यास का नायक नरेन देहाती पिछडेपन से क्षुब्ध होकर आर्थिक विषमता को दूर करना चाहता है। नरेन शोषित वर्ग के संघर्ष में भाग लेता है। इस उपन्यास में मजदूर श्रम की संगठित और जागरुक संस्कृति का विकास दिखाया है। कानपुर की मजदूर हडताल और आदोंलन की पृष्ठभूमि में मजदूरों के संयुक्त मोर्चे का तथा शोषितो के इन्कलाबी रास्ते का सही द्रिष्टकोण बनाया गया है।

गुप्तजी रचित 'सती मैया का चौरा' उपन्यास में गाँवों की मुक्ति का सवाल उठाते हैं। वे सांप्रदायिक सद्भाव के लिए किए जाने वाले संघर्ष को भी विस्तारपूर्वक अंकित करते हैं। कथा दो संप्रदायों के किशोरों – मुन्नी और मन्ने को केन्द्र में रखकर विकसित होती है। इस उपन्यास में अंधविश्वासों से अधिक रुढिवादी समाजा की विसंगतियों का यथार्थ सामने आता है। 'जंजीरे और नया आदमी' यह उपन्यास की रचना में सामंती शोषण का दर्दनाक चित्रण प्रस्तुत किया गया है। अधिकत्तर उपन्यासों में गुप्तजी ने प्रगतिशील व्यक्ति की भाँति शोषण, अत्याचार और शोषितों के विद्रोह की स्थिति दिखाने का प्रयत्न किया है।

मैं यहाँ बात करना चाहती हुँ गुप्तजी रचित 'गंगामैया' उपन्यास में आँचलिकता की । वैसे तो गुप्तजी को साहित्य में समाजवादी उपन्यासकार के रुप में ख्याति प्राप्त है इसके साथ उन्हों ने आँचलिक उपन्यासकार के रुप में भी अपना अलग स्थान निश्चित किया है । 'गंगामैया' उपन्यास सन १९५३ में प्रकाशित हुआ था । इस उपन्यास में उत्तर भारत के देहाती जीवन को प्रगतिवादी दृष्टिकोण से देखने का प्रयास किया गया है । 'गंगामैया' में उत्तर प्रदेश के बलिया अँचल के एक गाँव की कथाभूमि का चित्रण किया है । मानीकचंद तथा गोपीचंद इस उपन्यास के दो मुख्य पात्र है । दीगर भूमि पर अधिकार पाने वाले छोटे किसानों के संगठन और संघर्ष का वर्णन इस उपन्यास में किया गया है । लेखक लिखते है-" इस उपन्यास का कथानक जीवनगत बिखराव से संबंधित है ।" इस अपन्यास में अँचल नायक नहीं है । किंतु मटरु नायकत्व ग्रहण करता है जो समाजवादी नयी प्रगतिशील चेतना एवं संघर्षशील प्रवृति का प्रतीक है फिर भी आँचलिकता की प्रवृति उपन्यास में मटरु के नायकत्व को क्षीण करती है । इस उपन्यास की कथा गाँव के दो परिवारों मटरु एवं गोपी के परिवारों के संघर्ष के इर्द-गिर्द घूमती रहती है । और अपने परिवेश में स्पष्ट गाँव और गाँव के माध्यम से समस्त किसान वर्ग की जीवनगत समस्याओं एवं संघर्ष की उभरती चेतना का चित्रण करती है ।

'गंगामैया' उपन्यास में आँचलिक परिवेश में बलिया अँचल के लोगों की धार्मिक भावना, उनके लोकगीत, वैवाहिक जीवन, रीति-रिवाज, वेशभूषा, रहन-सहन, अंधविश्वास, भाषा और उत्सवों की भी लेखक ने बात की है । ग्रामीण जनता की भावना, उनके संवेगो, अनुभूतियों और उनकी सौंदर्यभावना का प्रतिनिधित्व करते है ।

'गंगामैया' उपन्यास में जो लोकगीतों का वर्णन लेखक ने किया है वह गीतों की भाषा क्षेत्रीय है । विभिन्न प्रकार के अवसर पर अलग-अलग गीत गाये जाते है । आँचलिक संस्कृति को उभारने के लिए गुप्तजी ने उपन्यास में लोकगीतों का प्रयोग किया है । गेहूं काटते समय लोग गाते है –

"ए पिया, तू परदेश न जा,
वहाँ तूजे क्या मिलेगा, क्या मिलेगा ?
यहाँ खेत पक गए हैं, सोने की बलियाँ झूम रही है,
ठहरे दे के पीढे पर तुझको बेठाउँगी,
अपने ही हाथों रच-रच खिलाऊँ ।"

खेत-खलिहान में धरती की बेटियाँ काम करती है तो मनोरंजन के लिए लोकगीत गाती है जिसको गाने से उनके काम में तेजी आती है और खुशी मिलती है । लेखक लिखते है—

" कुटूंगी, पीसूंगी, पूआ पकाऊँगी
ठहर दे के पीठे पर तुझको बैठाऊँगी,
अपने ही हाथों से रच-रच खिलाऊँगी ।"

ग्रामीण परिवेश में व्याप्त धार्मिक आस्था के मूल में प्रकृति की प्रबलता और उनकी अज्ञानताएँ उनकी समस्त जीवन प्रणाली प्रकृति और भाग्य पर आधारित है । इसका वर्णन लेखक ने उपन्यास में किया है । मटरु जेल में चंद्रग्रहण पर काशी स्नान करने से पुण्य प्राप्ति की बात करता है । धार्मिक बातों को लेकर विवाह में कई प्रकार की समस्याएँ आती है । मटरु जब गोपी की भाभी और गोपी का विवाह कर देता है तो गोपी के पिता मटरु पर आक्रोश व्यक्त करते है । अपनी बिरादरी और धर्म की अवहेलना होने के कारण वे मटरु पर नाराज है ।

मटरु मानता है कि माँ-बाप के लिए बेटा बिरादरी से बढकर होता है। विवाह की समस्या को मटरु समाज की धार्मिक समस्या के रुप में देखता है। सिर्फ भाभी की सहानुभूति के लिए नही बल्कि समाज के धर्म के सुधार के लिए निर्भीक और साहस के प्रतीक के रुप में वह गोपी के पिता से कहता है—"पागल तूम और तूम्हारा समाज है बाबूजी।"९कहने का तात्पर्य है कि तत्कालिन समाज में व्याप्त रुढियों, अंधविश्वासों को गुप्तजी ने 'गंगामैया' उपन्यास में उभारा है।

रीति-रिवाजों का ही कुपरिणाम है अंधविश्वास और उसके कुचक्र में पडे रहना। बलिया और पियरी नामक दोनों गामों के निवासी प्राचीन अंधविश्वासों में बंधे हुए है। उपन्यास में भाभी विधवा होने पर बहुत कुछ सहना पडता है। बहुत कुछ सुनना भी पडता है। भाभी की साँस कहती है—" तेरे लच्छन अच्छे नहीं है। तुझे यह क्या हो जाता है ? बेवा को दिमाग ठंडा रखना चाहिए। काहे पर अब तू मुझे दिमाग दिखाती है ? जो भगवान के घर से लेकर आयी थी वही तो सामने पडा है। चाहे रोकर भोग, चाहे हँस कर। इससे निस्तार नहीं। भले से रहेगी, तो दो राटी मिलती रहेगी। नहीं तो किसी घाट की न रहेगी। सब तेरे मुँह पर थूकेगें"।

अँचल के लोगों की वेशभूषा-रहन-सहन से भी समझ सकते है कि, अँचल की स्थिति किस प्रकार की होती है। गुप्तजी ने अपने उपन्यास के पात्रों के रंग-रुप, चाल-ढाल, वेशभूषा आदि के विषय में अपना दृष्टिकोण पाठक के सामने रखा है। भाभी मटरु की पहली पत्नी के सामने चाँदी के नये गहनों को देखकर जो मन:स्थिति का चित्रण हुआ है उसको चित्रित कर उसके चरित्रों पर प्रकाश डाला है। जसै—"चाँदी के नये-नये गहनों की चमक से आँखे जगमगा उठी। लखना की माँ का चेहरा खुशी से उदिप्त हो उठा। वह एक-एक को उठाकर देखने लगी। मन की उमंग दबाती हुई भाभी भी झुक गई।"

राजनितीक जीवन ग्रामाचंल परिवेश की परिवर्तित-अपरिवर्तित क्रियाशील मानसिकता है। 'गंगामैया' उपन्यास में गुप्तजी ने मटरु के माध्यम से किसानों को जाग्रत किया है। मटरु किसानों को कहता है----"तुम लोग अपनी रकम वापस मांग लो, साफ कह दो कि हमें जमीन नहीं लेनी।" जमींदारों के राजनितीक षडयत्रों का वह शिकार हो जाता है। चोरी का झूठा इल्जाम लगाकर उसे जेल में भेजने का षडयंत्र रचा जाता है। किसानों को अपने हक से परिचित कराने वालों को जेल की हवा खानी पडती है।

इस प्रकार 'गंगामैया' उपन्यास में गुप्तजी ने आँचलिक परिस्थितियों को जिस गहराई से विस्तार से और सुक्ष्मता से उद्घाटित किया है वह हिंदी के आँचलिक उपन्यास जगत में सर्वथा भिन्न है।

संदर्भ सूची

१. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास: दूसरा खंड, डो. गणपतिचंद्र गुप्त।
२. भैरवप्रसाद गुप्त के उपन्यासों में आँचलिकता, शेख सैबा शिरीन हारुन रशीद।
३. हिंदी उपन्यास सिद्धांत और समीक्षा, श्री माखनलाल शर्मा।
४. समाजवादी उपन्यासकार भैरवप्रसाद गुप्त, डो. सुनंदा पालकर।
५. गंगामैया, भैरवप्रसाद गुप्त।